https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH

(The Journal of Education and Humanities)

ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50

VOLUME-1|ISSUE-1|Jan-March, 2026

विश्व बंधुता और मानव पलायन: एक समालोचनात्मक विश्लेषण

***तौसीफ मलिक**
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
गाँधी महाविद्यालय, उरई जालौन , (उत्तर प्रदेश)
ईमेल -touseefmalik1991@gmail.com

****डॉ० मसूद अंसारी**
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,
मनोविज्ञान विभाग
गाँधी महाविद्यालय, उरई जालौन , (उत्तर प्रदेश)
ईमेल -Masaudazhar@gmail.com

सारांश:

दुनिया के तमाम विकसित और विकासशील देश अपने- अपने स्तर पर देश प्रेम के साथ-साथ विश्व प्रेम के प्रति अपनी सजकता को जोर-शोर से दिखाते है। सरकारें मोहब्बत, हमदर्दी, प्यार, मानवता के साथ देश की नीव रखती है, और दुसरे ही बरक्स वह इस प्रेम को किसी भौगोलिक परिधि में सीमित कर बाकी के प्रति नफ़रत और प्रतिद्वंदी जैसा बर्ताव कर वह हिडिन करिकुलम की तरह परोस देते है वह साथ ही साथ देश और विश्व के प्रति अपने लोगो में एक कर्तव्य की भावना को विकसित करने के उद्देश से जी20, ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद जैसी अवधारण को वैश्विक पटल पर रखती हैं। वह यह दिखाने का प्रयत्न करती है, कि विश्व के सभी मानव एक समान है, लेकिन दुसरे ही पहर जाति, विचार में भिन्नता, रहने का तरीका, ईश्वर संबंधित मान्यताएं, खाने संबंधित विभिनताएं, नसल, रंग, वर्ग, के चलते लोगो और लोगो का समूह किसी को खास भौगोलिक स्थान से दूसरे स्थान पर जबरन जाने के लिया मजबूर किए जाता है। तो सवाल लाज़मी हो जाता है, कि 12 दशकों से क्यों वह सफेद चादर ओढ़े विश्व बंधुता का नारा दे रही जब नफरत ही उसकी पहचान है। इस शोध आलेख में शोधार्थी ने कुछ प्रश्नों को उजागर करने का प्रयत्न किया है। जैसे विश्व बंधुता क्या है? मानव पलायन क्या है? क्यों विश्व बंधुता के नारे के साथ-साथ मानव पलायन बढ़ रहा है?

शब्द संकेत:-विश्व बंधुता, समाज, मानव, मानव पलायन

प्रस्तावना:

मानव को जन्म से कुरूर कहना अनुचित नहीं होगा। यह स्वभाव उसने अपने पूर्वजों से ही सीखा होगा। यदि हम मनोविज्ञान के *सामाजिक अधिगम सिद्धांत* की नजरो का सहारा लेकर बंडूरा के प्रयोग *बोबो डॉल* को देखे, जिसमे वह इस बात को सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे, कि व्यक्ति को जैसा माहौल दिया जाता है, व्यक्ति का स्वभाव भी वैसे ही हो जाता है। इसी बात की तस्दीक यदि हम मंटो के अफसानों में करे तो वह भी यही बताने की कोशिश कर रहे थे,कि कोई व्यक्ति पैदाइशी कातिल नही होता कत्ल को वह समाज से सीखता है, और फिर वैसे ही रवैया वह किसी खास समस्या के आने पर अपनाता हैं। इसी श्रेणी में यदि हम वाटसन के विचार को देखे, जिसमे वह कहते है, कि बच्चों में केवल तीन मानवीय भावनाएँ प्रेम, क्रोध और भय होता हैं, और निश्चित ही यह तीनों एक दूसरे को प्रभावित करती होगी। प्रेम के बढ़ जाने पर क्रोध और भय दूर हो जाते होंगे। दूसरी परिस्थिति में क्रोध के बढ़ जाने से व्यक्ति खुद को प्रेम से वंचित पाता होगा। लेकिन इन तमाम बातों में यह नहीं कहा जा सकता है, कि क्रोध के आ जाने पर पूर्ण रूप से प्रेम नष्ट हो जाता होगा। जरूर ही उसमे प्रेम की मात्रा कम हो जाती होगी।

समाज, मानव का शिक्षक

मान ले किसी रामू नामक व्यक्ति ने बचपन में अपने पिता को वर्चस्व स्थापित करने के भाव से लाठी डंडे का सहारा लेते देखा होगा। यह घटना मात्र वर्चस्व को स्थापित नही करेगी अपितु यह उस रामू नामक बालक के स्वभाव, मानवीय भावनाओं का भी निर्माण करेंगी।

इन्ही बातो को अतीत में जा कर देखने पर हमे मिलेगा कि किसी सभ्यता, संस्कृति, कबीले और राज्य के लोग और लोगो के समूह, दूसरी सभ्यता, संस्कृति, कबीले और राज्य के लोगो की सत्ता को उखाड़ फेक अपने सत्ता को स्थापित इसलिए किया होगा, जिससे वह अपने दैनिक जरूरत जैसे भोजन, रहने की जगह, पहनने का सामान, इत्यादि को प्राप्त कर सके। लेकिन वक्त और मानव की जरूरत जो दैहिक आवश्यकता से शुरू हुई थीं, उसने मानसिक आवश्यकता का रूप ले लिया, अब मानव अपने प्रतिष्ठा, श्रेष्ठ बनने की चाहत, अधिकार, वर्चस्व की ललक, मनोरंजन (नारी) और इससे बढ़ कर शक्ति का प्रदर्शन जिसमे वाह- वाह के नारे, जय- जय कार से वह मोहित हो कर दुसरे को उखाड़ फेंकने के लिए आगे आने लगा।

शुरुआती तौर पर युद्ध किसी से नफरत या स्वयं को बचाने के लिए प्रारंभ हुआ होगा, जैसे अमुक राजा का क्षेत्र धीरे-धीरे बढ़ ना जाए, या फिर अमुक क्षेत्र हमारे लिए घातक हो सकता है। इसी कारण से उसके अंदर युद्ध जैसा स्वभाव आया होगा, या यूं कहें जिसे हम युद्ध समझ रहे हैं वह युद्ध नहीं बल्कि आत्मरक्षा हो सकती है, जैसे ईरान, इराक, अफगान, डेनमार्क, इंग्लैंड और तमाम पश्चिमी देशों ने भारत की तरफ देखा होगा, कि यहां पर उचित संसाधनों का एक भंडार मौजूद है। कहीं ऐसा ना हो, कि ये हमसे ज्यादा सक्षम बन जाए। उनके मस्तिष्क में यह बात आई होगी, कि वक्त रहते उनके संसाधनों को या तो लूट लिया जाए या उस पर अधिपत्य स्थापित कर दिया जाए जिससे हम और अधिक शक्तिशाली बन जाए। इन तमाम बातों में यह बात स्पष्ट होती नजर आ रही है, कि शुरुआती तौर पर आवश्यकताओं की लड़ाई ने वर्चस्व का रास्ता ले कर शक्ति प्रदर्शन के कंधे पर अपना बसेरा कर लिया। निश्चित ही इन तमाम मामले को देख कर गौतम बुद्ध, रवींद्रनाथ टैगोर, विवेकानंद और तमाम ऐसे बुद्धिजीवी जो इस समस्त पृथ्वी को अपना घर और यहां के तमाम निवासियों को अपने भाई-बहनों के समान मान कर अपने विचार को समाजिक पटल पर स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। और यह आशा की थी, कि इनके मध्य यह जो वर्चस्व, शक्ति, धर्म,रंग,जाति,परंपरा,और इन सबसे बढ़कर राजनीति की एक लंबी दीवार खड़ी कर दी गई है, उसे जल्द से जल्द उखाड़ फेका जाए या फिर इन दीवारों से बनने वाली भावनाओं को खत्म कर संपूर्ण विश्व और इसमें रहने वाले लोगों को एक धागे से बांधने के लिए विश्व बंधुता जैसी अवधारणा की आवश्यकता है।

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में विवेकानंद की चेतना इस बात पर विचार करने के लिए मजबूर हुई कि जब सभी पृथ्वीवासी अस्थाई है तो फिर किस बात की कब्जेदारी है।

टैगोर की विश्व बंधुआ जिससे वह जीवन से गुलामी और बंधनों को उखाड़ फेंकने की ताकत और जीवन को पूर्ण बनाने, समाज को जो वह पूर्ण विश्व समझते थे, गीतांजलि के इन पंक्तियों में देखी जा सकती है-

जहाँ मन भय रहित हो और सिर तना हुआ।
जहाँ ज्ञान मुक्त हो।
जहाँ दुनिया किसी संकीर्ण दीवारों से टुकड़ों में ना बटी हो।
जहाँ शब्द सत्य की गहराई से निकलते हो।
जहाँ पूर्णता के लिए अथक प्रयास अपनी बाहों को फैलाए हो।
जहाँ मृत आदत की धुंधली रेगिस्तान में तर्क ने अपनी धारा ना खोई हो।
जहाँ मन को अपने द्वारा निरंतर व्यापक विचार और कार्य में आगे बढ़ाया जाता हो।
स्वतंत्रता के उस स्वर्ग में मेरे पिता मेरे देश को जागने दो।

(गीतांजलि XXXV पृष्ट 36)(हिंदी अनुवाद)

विवेकानंद या टैगोर जब विश्व बंधुता को देखने का प्रयत्न कर रहे थे, तब उनके मस्तिष्क में समाजवाद और मानवतावाद की एक व्यापक अमूर्त अवधारणा थी हमें उनकी इस अमूर्त अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए सार्थक प्रयास करना था। निश्चित ही देशों में समय-समय पर आई सरकारों ने इनकी अवधारणा को मूर्त रूप देने का प्रयास तो किया, लेकिन वह अपने राजनीतिक विचारधाराओं से भी समय-समय पर प्रभावित होती रही, चुनाव के माहौल का सतत् रूप से बना रहना, इन अवधारणाओं के लिए घातक बन गया। वैश्विक भाईचारा या बंधुता की अवधारणा निसंदेह ही सहानुभूति, समानुभूति, समावेश, और इन तमाम में से सबसे ज्यादा मानव को मानव मानने पर जोर देती है। सरकारों ने वैश्विक भाईचारा को प्रोत्साहित कराने के लिए वैश्वीकरण का कंधा थामा जिससे इसको बढ़ावा दिया जा सके, लेकिन विश्व बंधुता बीच के बवंडर में झूल गई। और वैश्विकरण से दो- दो हाथ कर बैठ जाना उचित समझा। विश्व बंधुता जहां मानवतावादी दृष्टिकोण है, वही वैश्वीकरण बाजारवादी। हमने नारा तो विश्व बंधुता का दिया लेकिन वैश्वीकरण तक ही हम सीमित

रह गए। परिणाम हमारे सामने हैं कि हमें वापस से दूसरी भौगोलिक सीमा का सशक्त हो जाने का डर सताने लगा, और परिणाम स्वरूप धार्मिका अलगाव, वैचारिक मतभेद, नस्ल भेद, रंगभेद जैसी अवधारणाओं ने मानव को मानव के प्रति नफ़रत का इजाफा किया। अल्पसंख्यक समुदायों में डर का बढ़ना प्रारम्भ हुआ और मानव पलायन ने अपनी गति बढ़ा दी।

मानव पलायन

मानव पलायन की अवधारणा कोई नई अवधारणा नहीं है। मानव का स्वभाव ही ऐसा था, कि वह अपने आवश्यकताओं की पूर्ति तथा बेहतरी के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था जिससे बेहतर सेवा, संसाधन, सुविधा स्वास्थ्य, शिक्षा, और रोजगार को प्राप्त कर सके। लेकिन वक्त की नजाकत और कौन पहले आया कौन बाद में, इसकी स्व निर्धारित स्वभाव ने मानव को प्पलायन के लिए मजबूर कर दिया।

जब व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह किसी खास भौगोलिक सीमा को छोड़ कर दूसरे भौगोलिक सीमा को पार कर वहां बसर करता है, तो ऐसी स्थिति को पलायन कहते है पलायन को दो आधारों पुश और पुल में बाटा जा सकता है। एक अवधारणा में वह अपने जीवन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है लेकिन वहीं दूसरी अवधारणा पुश जिसमें वह पलायन के लिए मजबूर किया जाता है या मजबूरी उसकी जाति संबंधी अवधारणा,धार्मिक अवधारणा, रंग,नस्ल इत्यादि हो सकती है।

जिसका सबसे करीबी उदाहरण मणिपुर के रूप में देखा जा सकता हैं। जहां कुकी समुदाय स्वयं को प्राचीन तथा मैतई समुदाय स्वयं को प्राचीन बताने की होड़ में डटे है। इन दोनों समुदाय के मध्य संघर्ष में दो बातों को देखा जा सकता है। प्रथम यह कि दोनों की धार्मिक मान्यताएं और संख्या बल, इन्हीं के साथ यह नारे अलगाव को हवा देने का काम करता है, कि "जिसकी जितनी संख्या भारी उसकी उतनी हिस्सेदारी" और नफ़रत एक आग पकड़ लेती है। मैतई समुदाय तकरीबन 53% तथा कुकी और नागा समुदाय करीबकरीब-37% मणिपुर में निवास करते हैं। दोनों के मध्य डर इस बात का है, कि वर्चस्व किसका स्थापित होगा? संसाधनों पर किसका हक होगा? अधिक संसाधन किसके होंगे? और यही तमाम बातें संसाधनों का बंटवारा, सुविधाओं का बंटवारा, धार्मिक और वैचारिक मतभेद आज तकरीबन एक लाख मणिपुर निवासियों को उनका घर छोड़ने पर मजबूर कर रहा है ।वह सिर्फ अपना घर नहीं छोड़ेंगे, अपितु वह वहा की गलियां, रिश्ते, पेड़, झोपड़ी, चौपाल, चौपाल की कहानीया और इससे संबंधित भावनाओं को भी वही छोड़कर आएगा।

यू० एन० एस० सी० आर० की नजरो में मानव पलायन

यूएनएससीआर का कहना है दुनिया भर में 83% शरणार्थी विकासशील देशों में रहते हैं और विकासशील देशों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण अचानक आए लोगों का समावेश उचित ढंग से नहीं कर पाते है।

यूएनएससीआर के अनुसार 2022 के अंत तक दुनियाभर में जबरन विस्थापित किए गए होगा की संख्या करीब करीब 108.4 मिलियन है और 35.3 मिलियन शरणार्थी हैं। कुल की संख्या का 52% भाग सीरिया, यूक्रेन और अफगानिस्तान के निवासियों से संबंधित है। राजनीतिक कारण से 5 मिलियन से अधिक लोगो को अपना निवास स्थान छोड़ना पड़ा। 2015 से 2021 तक यह आंकड़े तकरीबन प्रति वर्ष 10% की उछाल ले रहें थे। लेकिन 2021 से 22 में यह आंकड़ा 20% की उछाल से हमारे सामने आया है।

आंकड़ों के आधार पर देखने से यह दुनिया की कुल आबादी के 1% हिस्से से अधिक है लेकिन मानवता और सामाजिकता के तराजू से देखने पर यह महज़ आंकड़ा नहीं अपितु वह जिंदगियां है। जो अपनी जिंदगी की जद्दोजहद में अपने पीछे व तमाम खुशियां, घर, रिश्ते, दोस्त, मोहल्ले और वह तमाम भौतिक और अभौतिक वस्तुओं को छोड़ आए हैं जिससे उनकी भावनाएं जुड़ी थी। फिर यह किसी दूसरे देश की सरहद पर इस उम्मीद से खड़े होते हैं, कि वह इनका सहारा बने उदाहरण बतौर बांग्लादेश, म्यांमार,पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका, शिरिया, अफगानिस्तान, जैसे देशों को देखा जा सकता है यह मामले किसी देश की अपनी आंतरिक भौगोलिक सीमा में भी होते देखे जा रहे हैं जो आंकड़े तकरीबन 6 करोड़ के आसपास है। हमें अवश्य ही और गंभीरता से सोचने की जरूरत है, कि क्या हमे उसे समाजिक जानवर कहना ठीक है या उसे महज़ जानवर की ही श्रेणी में रखना उचित होगा। क्योंकि उसका स्वभाव जानवरों की भांति है। जिसका अपना इलाका है और वह अपने इलाके पर अपना आधिपत्य स्थापित रखना चाहता है।

निष्कर्ष

देश, राज्य और उनकी तमाम सरकारें वैश्विक भाईचारे या बंधुता को तो बढ़ावा देने का प्रयास करती हैं। लेकिन वह वैचारिक मतभेद, राजनीतिक विचारों तथा चुनाव के परिणाम को दुरुस्त करने के लिए धर्म, रंगभेद,नस्ल, जाति और क्षेत्रीय भावनाओं का इस्तेमाल कर वैश्वीकरण तक खुद को सीमित कर लेती हैं। और उसका परिणाम पलायन, प्रवास, और शरणार्थी दिनप्रतिदिन बढ़ रहे हैं।- यह आंकड़े

यदि हमें नियंत्रित करने है, और आपसी भाईचारा, मानवता, सहानभूति, समानभूति को लाना हैं, तो टैगोर, विवेकानंद के तरीकों की ओर लौटना होगा तथा मानव को यह एहसास दिलाना होगा, कि वह अस्थाई पृथ्वीवासी है।

संदर्भ ग्रंथ

Pustak.org. *Gitanjali*. https://www.pustak.org/index.php/books/bookdetails/2757/Gitanjali

Refugee Council of Australia. (2024). *How many refugees?*https://www.refugeecouncil.org.au/how-many-refugees/2/

Nationalist Online. (2021). *Relevance of Swami Vivekananda's message of Vishva Bandhutva*. https://www.nationalistonline.com/relevance-of-swami-vivekanandas-message-of-vishva-bandhutva/

Educalingo. *Visvabandhuta*. https://educalingo.com/hi/dic-hi/visvabandhuta/

United Nations High Commissioner for Refugees (UNHCR). (2023). *UNHCR*. https://www.unhcr.org/